नाथ परम्परा के हठयोगी

(Hathayogi of Natha tradition)

BPT 2ND YEAR

PAPER 2ND : PHILOSOPHY OF YOGA

Dr. Ram Kishore
Assistant Professor (Yoga)
School of Health Sciences
CSJM University, Kanpur

नाथ परम्परा के हठयोगी

(Hatha Yogi of Natha Prampra)

हठयोग की उत्पत्ति आदिनाथ से मानी जाती है। आदिनाथ अर्थात् भगवान शिव ही हठयोग परम्परा के आदि योगी और आदि गुरू है। उसके बाद नाथ परम्परा (मत्स्येन्द्रनाथ) से होते हुए हठयोग परम्परा आगे विकसित हुई। नाथ परम्परा के योगी इस प्रकार है :

आदिनाथ से मत्स्येन्द्रनाथ, मत्स्येन्द्रनाथ से शाबर, शाबर से आनन्द भैरव, आनन्द भैरव से चौरंगी, चौरंगी से मीन, मीन से गोरक्षनाथ, गोरक्षनाथ से विरूपाक्ष, विरूपाक्ष से विलेशय, विलेशय से मन्थन, मन्थान से भैरव योगी, भैरवयोगी से सिद्धि, सिद्धि से बुद्ध, बुद्ध से कन्थडि, कन्थडि से कोरण्टक, कोरण्टक से सुरानन्द, सुरानन्द से सिद्धिपाद, सिद्धिपाद से नित्यनाथ, नित्यनाथ से निरंजन, निरंजन से कपाली, कपाली से बिन्दुनाथ, बिन्दुनाथ से काकचण्डीश्वर, काकचण्डीश्वर से अल्लाभ, अल्लाभ से प्रभुदेव, प्रभुदेव से घोड़ानाथ, घोड़ानाथ से कपालिक, कपालिक आदि हठयोग महासिद्ध को प्राप्त होकर हठयोग के प्रभाव से मृत्यु को नष्ट करके ब्रह्माण्ड में विचरण करते हैं।

श्रीआदिनाथ, मत्स्येन्द्रशाबरानन्दभैरवाः। चौरंगीमीनगोरक्षविरूपाक्षविलेशयः।

मन्थानो भैरवो योगी, सिद्धिबुधश्च कन्थडिः। कोरण्टकः सुरानन्दः सिद्धिपादश्च वर्पटी।।

कानेरी पूज्यपादश्च नित्यनाथो निरंजनः। कपाली बिन्दुनाथश्च, काकचण्डीश्वराह्वयः।।

अल्लामः प्रभुदेवयच, घोड़ा चोली च टिंटिणिः। भानुकी नारदेवश्च, खण्डः कापालिकस्तथा।।

इत्यादयो महासिद्धाः हठयोगप्रभावतः। खण्डयित्वा कालदण्डं ब्रह्माण्डे विचरन्ति।। हठयोगप्रदीपिका 1/5–9

छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय कानपुर
CHHATRAPATI SHAHU JI MAHARAJ UNIVERSITY KANPUR
आरोह तमसो ज्योति

धन्यवाद